ज्ञानमाला

گیان مالا

जिस में श्री कृष्णचन्द्र परब्रह्म ने आचारानु-
रागियों के उपकारार्थ बहुधा आचार धर्म्म
अपने प्रिय भक्त अर्जुन से २४५ शिक्षाओं में
उपदेश किया है

श्री युत मुन्शी नवलकिशोर स्वाचाराध्यक्ष ने
अपने पण्डितों से शुद्ध कराय

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापी गई

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् मार्च सन् १८८० ई० पर्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तैयार हैं वह इस सूची पत्र में लिखी हैं और इन का मोल भी बहुत किफायत से घटाकर नियत हुवा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्योपार की इच्छा हो छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर कीमत का निर्णय करलें ॥

नामकिताब	नाम किताब	नाम किताब
व्याकरण और ज्योतिष	वैद्यक	शब्दार्थ कोष
सिद्धान्त चन्द्रिका	शार्ङ्गधर सटीक	अमर कोष प्रथम कांड
लघु कौमुदी	वैद्य जीवन	अमर कोष तीनों कांड
मुहूर्त्त चिन्तामणि सा-	वैद्य मनोत्सव	भाषा टीका सहित
रिणी	अमृत सागर	अनेकार्थ कोष
शीघ्रबोध	अमर सागर बड़ी	व्रजविलास
पराशरी सटीक	अमर विनोद	दुर्गा पाठ सटीक
मुहूर्त्त गणपति	जगद विनोद	दुर्गा पाठ मूल
सङ्ग्रह शिरोमणि	औषधि सङ्ग्रह कल्प	अपराध भञ्जन स्तोत्र
जातक चन्द्रिका	वल्ली	महिम्नस्तोत्र
लघुजातक भा॰टी॰स॰	निघण्टु भाषा	श्री गोपाल सहस्रनाम
भाषा जातकालंकार	वैद्य दर्प्पण	शिवार्चन
संस्कृत जातकालंकार	राम विनोद	गङ्गा लहरी
जातकाभरण	कोष और इतिहास	भगवतीगीता
मुहूर्त्त दीपक	शिवसिंह सरोज	श्री मद्भागवत सटीक
होरा मकरन्द	सामुद्रिक	जल झूलन
मुहूर्त्त चिन्तामणि	गणित कामधेनु	हनुमान बाहुक
मुहूर्त्त मार्त्तण्ड	कमीशन बड़ोदा	सुखसागर

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ ज्ञान माला

लिख्यते ॥

एक दिन राजापरीक्षित गद्दीपर बैठे थे ता समय श्रीव्यासजीके पुत्र श्रीशुकदेवजी आये राजा देखतेही सिंहासनसे उतर खड़ाहुवा और ऋषि के चरणारविंद में गिर के साष्टांग दण्डवत की फिर बड़े आदर और सत्कार सहित उनको सुन्दर स्थानमें लेजाकर रत्नजटित सिंहासन पर बैठाय, दोऊ चरण कमलनको धोकर चरणोदक लिया और विधिपूर्वक पूजनकरके नानाप्रकार की सामग्री भोजनकराई और घंटानादसहित आरती उतारी तबतो राजाके मनकी लगन देख श्रीशुकदेवजी प्रसन्नभये तासमय राजाने दोऊ कर जोड़कै बिनतीकीनी कि हे कृपासिंधु दीन दयालु आपकी कृपासे सदैव वेद और पुराण के सुननेसे मेरे हृदयमें चांदना होताहै और मनको आनन्द प्राप्त होता है परन्तु अबमेरे मनमेंसंदेह प्राप्त हुवा है कि संसारमें ऊंच और नीचदोऊ कर्महैं सो आपकृपाकरके इन दोनोंकर्मनके भेद भिन्न २ मोसोंकहो और मेरेमनका संदेहनिवारणकरो राजाका यह प्रश्न सुनिकै श्रीशुकदेवजी बहुत प्रसन्नभए और आज्ञादी कि हेराजातेरे

प्रश्नमें संसारी मनुष्योंको बड़ालाभहै और जोयह संदेह तेरे मनमें उपजा है सोई अर्जुन के मनमें उत्पन्न हुआथा सो श्रीकृष्णजीनें वाके प्रश्नका उत्तर दियाहै सोईमैं तेरेआगे कहताहूं मनदेके सुन ॥

श्रीशुकदेवजी राजापरीचितसे कहतेहैं किहे राजा एक दिन प्रातःकाल श्री कृष्णजी अर्जुनके घर पधारे खबर पाई कि अर्जुन सोवेहैं यहबात सुनके श्री कृष्णजी अचंभे में रहे फिर अर्जुन ने महाराज श्रीकृष्णजीको स्वप्नमें देखा और तुरंत जागउठा तबसेवकने अर्जुनसेकहा कि हेस्वामी श्रीकृष्णजी पधारे हैं यहसुन अर्जुन दौड़कर श्री कृष्णजी के चरणार बिंद में गिरा और दंडवत करके हाथजोड़ बिनती की किहे सच्चिदा-नन्द जगदीशमोसे यह अपराध अनजानेंबनपड़ाहै सो आपक्षमाकरो और मेरीरचा करो यहसुन के श्रीकृष्णजीनें अर्जुनसेकहा अर्जुन तूबड़ा बुद्धि-मानहै और ज्ञानीहै याससय तोको मैंनेतोस्वप्न अवस्थामें देखके बहुत सोच किया क्योंकि मनुष्य देह बहुतकठिनतासे प्राप्तहोतीहै सोया देहको पायकेऐसेसमयमें सोवनाबुद्धिमानको योग्यनहीं है ये वचन श्रीकृष्णके सुन अर्जुनने फिर बिनती करि प्रश्न कियो हे दीनदयाल दीनबंधु जो अप-राध सेवकसे अन जाने बनआया है वाको कृपा दृष्टिसे चमाकरके अबआप आज्ञाकारीसे आज्ञा करो कि कौन २ से अहितकारी कर्मनका त्याग करना अवश्यहै तब श्रीकृष्णने उत्तरदिया किहे

मित्रजो बातैंबेदसे गुप्तहैं और दैवताओंने जानी नहींहै सोतेरे आगे कहता हूं मनलगाय कै सुन और इनबातोंका तू वा और कोईसुनकै या पढ़ कै अंगीकार करेगा सोपापके बंधनसेछूटकैमुक्ति को पावेगा श्रीकृष्णजी कहतेहैं ॥

१ पहिलीशिक्षा हेअर्जुन प्रातःकाल जिस समय श्रीसूर्य उदयहोंय मनुष्यको सोवना योग्य नहींहै क्योंकि एकपहर रात्रिबाकी रहे परदेवतोंका आगमन होताहै इसलिये मनुष्यको चाहिये कि दोचार घड़ीके सबेरे उठके परम दयाल परमेश्वरके ध्यानमेंमनलगायके भजनानंद में मगनरहै और अरुणोदय होयतब स्नानकरके श्रीसूर्य नारायणको जलअर्पन करके दण्डवतकरे औ पितृदेवतोंको जलदेइतौ जलग्रहणकरिबेसो सूर्यदेवताजी और पितृदेवता बलवान होय कै प्रसन्नतासैं आशीर्बाद देवैंजो मनुष्य इसविधिसो अंगीकार करेंगे सो इसलोक परलोक का सुख भोगेंगे ॥

२ शि० हे अर्जुन एक चारपाई के बिछौनै पै अपनीस्त्रीके सिवाय किसी दूसरेके संगसोवना पापका मूलहै क्योंकि बिवाहिता स्त्री तो अर्द्धांगी सब पाप और पुण्यमें संगआती है परंतु बातेरे और दूसरा अपने बिछौनेपर सोवै तो वह भी पाप पुण्यमें साझी हो यह सुनके अर्जुनने हाथ जोड़कै प्रश्न कियो कि हे कृपाल करुणानिधान जो कोई नतैतो अपनेघर आवै और उसके पास

बिछौना नहीं होय तो क्या करना उचित है तब श्रीकृष्णने कहा कि उस नततीको उचित है कि जो अपने समान अंगके अपना वस्त्र बिछौने पै बिछाके उसपर सोवै तो कुछ दोषनहीं होय ॥

३ श्रि० हे अर्जुन बिधवा स्त्रीके हाथसों र-सोई पावना बड़ादोषहै क्योंकि जिसस्त्रीकापति मरजाय वो अधजले मुर्देके समान होजाती है इसकारणउसकेहाथसेरसोईपावनामहापापहै॥

४ श्रि० हेअर्जुन जो कोई संध्यासमय घरके आंगनमें झाडूदेता है वह अवश्य दरिद्री होता है क्योंकि वह समय लक्ष्मीजीके गमन करनेका घरघरमें है जिसके हाथमें झाडूदेखे हैं लक्ष्मीजी वाको यापदेके गमन नहीं करें ॥

५ श्रि० हेअर्जुन जो मनुष्य एकादशीयाऔर कोई व्रतधारणकरै और स्त्रीके पासजाय तो व्रत का फल नहीं पावै यहसुनके अर्जुन ने शोककर और कै प्रश्नकिया कि हे जगदीश व्रतकेदिन जो स्त्री त्रिदोष कर्मते निश्चिंत होके स्नानकरै और पुरुष वाके पासजाय नहीतो महापातकी होय औ जाय तो व्रत निष्फलहो यापर कहाकरना चाहिये श्रीकृष्णजीने कहा कि अर्धरात्र बीतेपर जायतो कुछदोष नहीं क्योंकि रात्रिके दोपहर पिछले अगले दिनका गणित में है ॥

६ श्रि० हे अर्जुन रात्रिके समय दीपककी बाती जलने से बाकी बचेतो वा मरीबाती को दूसरेदिन जलावै तो महापापहै याही पाप से

वा मनुष्यकी की बांझ बहुत काखरहैगी अर्जुनने जब श्रीकृष्णके मुखारविंदसे यह शिक्षासुनीबहुत पश्चात्तापकीनो औरचकित भयो फिरदोऊकर जोर के बिनतीकीनी कि हे अनाथके नाथ दया सिंधु वासुदेव आपने जो शिक्षाकीनी उनकेसुन्ने से दासके मनमें अति अनन्द प्राप्तभया है कृपा करके कुछ और आज्ञा कीजिये॥

७ शि॰ हे अर्जुन जो मनुष्य सूर्यके सन्मुख होयकै दन्तधावन और कुरला करैतो महापातकी होय और अंतकाल नरक में जाय जान्ना चाहिये कि देवतान में ये तीनों देवता बड़े हैं जो मनुष्य प्रीतिकी रीतिसे इनका पूजन सदा करता रहै तो वाकौ यज्ञ करवे को फल प्राप्त होयगे। अर्जुनने प्रश्नकिया कि हे घनश्याम चतुर्भुजस्वरूप इनतीनों देवतोंका पूजन किसविधि प्रतिदिन करना चाहिये सो कृपाकरके आज्ञा करो श्रीकृष्णजीने कह्यौ विधिपूर्वक सूर्य नारायणको इतवार को व्रत धारणकरै और व्रत न राखसकै तो वादिन नोनकी खाय और प्रातःकाल स्नान करिकै श्रीसूर्यको तांवे के पात्रसोंजल अर्पन करै दण्डवत करै विधि पूजन अग्निदेवता प्रातःकाल स्नानकरके अपने इष्टदेवको ध्यान,स्मरणकरै फिर अर्कां घृत तिल जव सामिग्रीसे अग्निदेव को पूजनकरै और जो या भांति नहीं करसकै तो रसोई होजाय तब रसोई की सब सामग्री से पूजनकरै विधि पूजन जलदेवताप्रातः

काल स्नानकरिकै जलदेवता पै धूप चढ़ावै और चन्दन चावल पुष्पचढ़ाकै मिठाई अर्पनकरै इति पूजन प्रतिदिन जो मनुष्य इस भांति इनतीनों देवतानको पूजन करै तो इनकी आशीर्वाद सों इसलोक में धन संतान परलोक में बैकुण्ठ धाम पावै ॥

८ शि० हे अर्जुन मनुष्य को चाहिये कि जलते भये दीपकको बुझावै नहीं और जो कोई पुरुष दीपक सों दीपक जोड़ै तो पातकी होय ॥

९ शि० हे अर्जुन ब्रती मनुष्य चारपाईपर सोवै तो ब्रत निष्फलजाय क्योंकि जिसदेवताको ब्रत धारणकरै सोई देवता ब्रतके दिन मनुष्यकी देहमें बास करे हैं इसलिये जो ब्रती ब्रतके दिन स्वच्छता से रहे और चारपाई पर सोवै नहीं पृथ्वी पर सोवै स्त्रीसे अलगरहे एकबार फलाहार करै कुछ ब्राह्मण को देवैतो देवता प्रसन्न होइकै आशीर्बाददेवे और ब्रतफलदायकहो ॥

१० शि० हे अर्जुन ब्रतकेदिन किसीको अपनी जूठन देनी न चाहिये क्योंकि जो कोई जूठा खायगा सो ब्रतके फल में भागी होयगा यह बड़ा दोष है ॥

११ शि० हे अर्जुनजो मनुष्य रसोई मध्यमें अर्थात् कछुसामग्री बाकी बनानी रहगई होय जल्दी करके रसोई खाने लगजाय वा जबलों रसोईकी सामग्री तैयार नहीं होसकै और अग्निदेवको भोजन न करायले किसी को रसोई मेंसे

अग्नि न देवै या रसोईमें थालीआदि कोई पात्र नहीं होय और रसोई की सामग्री को पृथ्वी पर धरदेवै तौ इन तीनों पापनकों कारन जो इनमें सो एक २ न्यारो २ महा पापसे वह मनुष्य सदा दरिद्री रहैगा इसलिये मनुष्यको अवश्य है कि जब रसोई में सब सामग्री तैयार होजाय तब स्वच्छता सों प्रथम आसन पै चौरस बैठके अग्निमुखके द्वारा पूरण ब्रह्मपरमदयालपरमेश्वर को भोजनकरावे फिर अन्नदेवको नमस्कार करै फिर एक अभ्यागत कों रसोई की सब सामग्री भोजन करावै और जो सामग्री नहीं होय तौ थोड़ा सब सामग्री अभ्यागत के निमित्त अर्पिके आप रसोई भोजन करै तौ इस महा पुण्य के प्रताप सों अग्नि महाराज और अन्नदेवसे आशीर्वाद पाइके वह नरसदा सुखीरहैगा॥

१२ श्रि० हेअर्जुन जो मनुष्य तांबेके पात्रको जूठनसों अशुद्धकरै वा अशौचस्थान में लेजाय सो अंतकाल नरकवासीहोय क्योंकिसब धातन में तांबा महा पवित्रहै और इस लिये जोमनुष्य तांबेके पात्रमें जल भरके स्नान करैगा तौ गंगा जलके समान महात्म्य है तिल असजल अर्पनकरै तौ महा पुन्य है॥

१३ श्रि० हे अर्जुन जो मनुष्य ब्राह्मणी वा और परनारिनसे मैथुन करै और वाके बिंदुसे कदाचित् किसी स्त्रीको गर्भ रहै और पुत्र पैदा होइ तौ वा पापी मनुष्यके पितृदेव जो अपने

सुकर्म भोगनेके कारन बैकुंठ धाममें बास करते होंय सो बैकुंठसेनर्कमें बासकरैं व्रततर्पणश्राद्धसें सदा विमुखरहै यह्पाप सब पापनसेंभारीहै ॥

१४ श्रि० हेअर्जुनजो मनुष्य स्त्रीसेंसंगकरिके और अपवित्र रहै इस पापके अंतकाल नर्कमें जाय इसलिये कि उसका पांव पृथ्वी पर धरना ऐसाहै जैसा पितरन के शिरपर धरा ॥

१५ श्रि० हे अर्जुन अमावस्या को वृक्षकी डाली औ पत्ती का तोड़ना ब्रह्म हत्याके समान है और वादिन दंतधोवनकरनाभी अयोग्यहै ॥

१६ श्रि० हे अर्जुन जो कोई परदेशी या अभ्यागत कुछ याचनाकरै तो अपनीश्रद्धाके अनुसार वाकोदेवे विमुख न जाने देतो महापुण्यहै ॥

१७ श्रि० हे अर्जुन जो मनुष्य अपने घरमें टूटीखाट फूटे बर्तन राखे सो दरिद्री होयहै ॥

१८ श्रि० हे अर्जुन जोमनुष्य नारायण का नामलेके खायापीया करै औचलते फिरतेउठते बैठते जोकाम करै परमेश्वरका नामलेके करैतो महा सुकर्मके फलसे इस लोकके औपर लोकके सुखोंका परम आनन्द पावे यहनेम महापुनीत है अरजो मनुष्य चलते फिरते डगर बाटमें बारंबार मनमें आवै सोले खाय औरपरमेश्वर का नाम उच्चारण नहीं करै तौ इसपापसे विपतके बन्धनसे कभीनहीं छूटै ॥

१९ श्रि० हे अर्जुन किसी मनुष्यके संगएक पात्रमें भोजन करना बड़ा दोषहै न जानाणाय

पूर्वले जन्ममें वह मनुष्य कौनसी देहमेंथा। भोजन करनेका कारण वाके पूर्व जन्मकी प्रकृति याके अंतष्करण में प्राप्त होजाय इस लिये ऐसे नीच कर्मको अंगीकार करना न चाहिये॥

२० श्री० हे अर्जुन भोजन करने के समय अन्न देवता मुखमें पधारे हैं इसलिये मौनधरके भोजन करना उचित है क्योंकि बोलने बतलाने से मिथ्या बचन मुखसे निकसे तो अन्न देवके शापसे याही जन्ममें बिपतके बंधन में बंधे इसलिये मनुष्यको अवश्य है कि एक चित्त होय चौरस बैठके दायें बायें न देखे और अन्नदेवकी बड़ाई करते भोजन करै तो इस कर्मसे सदा सुखी रहे यह सुन अर्जुन ने प्रश्नकिया कि हे जगदीश जगत गुरु भोजन करते कुछ कहना किसी से अवश्य होय तो कैसे करना चाहिये श्रीकृष्ण जीने आज्ञा दीनी कि बोलना अवश्य होय तो मनमें अन्न देवसों प्रर्थना करके सच्चिदानन्द भगवानका नाम लेके पांच ग्रासले अरु आचमन करके बोले परंतु किसी को बुराई न करै और खोटा बचन न बोले॥

२१ श्री० हे अर्जुन जो मनुष्य अपनी व्याहता अर्द्धांगी परमहित कारी स्त्रीसे बिपरीत ठान के अपने मुखसेवाकी बुराई करेअरु खोटा बचन बोलके मन को दुख रूपी अग्नि में दहे इसपाप से इसलोकमें तो सदा क्लेशके बंधनमें रहे और पर लोकमें नर्कमें जायके बासकरै क्योंकि जिस

समय ब्याहता स्त्रीके गर्भसे पुत्र प्रगट होताहै तिस समय उसके पितृ देव कदाचित् नीच कर्मके फलसों भोगबेको नर्कबासी होयतौ पाप मोचनपुत्रकी पर्मप्रसन्नतासे नीचकर्मनकेभोगन तेंछुटि पायकै बैकुण्ठको सिधारेंऔ बारंबारआ-शीर्बादकिया करैइसलिये मनुष्यको चाहिये कि प्रेम प्रीतिसों ब्याहता स्त्रीको रखैवह मनबच करके अपने पतिके समान सुन्दर और हितका-री किसीको न जाने क्योंकि ब्याहता पाप पुण्य की संगीहै यातेंवाके पापनसों पाप और पुन्यन सों पुण्यकी बढ़तीहोतीहै और कदाचित् वासों कोई अपराध बन आवै तौ पुरुष को चाहिये वापै कोपदृष्टि न करै सदा प्यारसेवा को शिक्षा देतारहै और वाकेमनको सदा प्रसन्नराखै और शीलवन्त स्त्री को चाहिये कि अपने पतिको ई-श्वरके समान जानके निसदिन वाकी सेवामेंतन मन अर्पनकरै और पातिव्रत धर्म को सावधान राखै और पतिकैसाही कठोर निर्दयीहोपरन्तु वाको ईश्वरके समान जाने जैसे संपतिमें तैसेंही बिपतिमें प्रसन्नता सहितपतिकी आज्ञा न मो-ड़ै और दुखसुखमें जिसबिधि परमेश्वर राखैरहै अपने प्यारे पीवकी प्रसन्नता का उपाय करती रहै और अपनी श्रद्धाके अनुमानसुन्दर वस्त्रऔरं आभूषण से अपने अंगको शोभितकरके पुरुष के मनको मुदितराखै जासे पुरुषको मनपर नारि-न पै न जाय और अपने धर्मकर्ममें सावधानरहै

ऐसी विधिसो जो स्त्रीपुरुष आपसमें प्यार प्रीति सां रहै तो इसलोक में सुखों का भोगकरै अरु अंतकाल वैकुण्ठधाम पावै ॥

२२ शि० हे अर्जुन दीपक या सूर्यकीज्योतिसे खाट की छाया मनुष्य की देहमें पड़े तौ दोष है ॥

२३ शि० हेअर्जुन जो मनुष्य किसी का मूढ़तावा और किसीप्रकारसों मारनेका उपायकरै तो इस पापसे नर्कवास होता है ॥

२४ शि० हे अर्जुन रूखी रोटी घृतबिना का भोजन करना बड़ा दोष है जानों प्रेत संग खाया क्योंकि जिस रसोईमें घृत बिना सामग्री बने तहां प्रेत बिसकरतेहैं और उस घरमेंदरिद्र कावासहोताहै इसलिये मनुष्यका उचितहैकि रसोईमें थोड़ाहोय जितना घीलाके रोटी खाय क्योंकि घृत गन्धसों प्रेत बाधकनहीं होसकैं ॥

२५ शि० हे अर्जुनजो मनुष्यदीपकसों अग्नि बारके रसोई बनावै याकुछ और कामकरै तो वाको दीपक यापदेता है और दोषहै क्योंकि वह अग्निमुर्दाकी अग्निकेसमानहै अशुद्ध है॥

२६ शि० हे अर्जुन जो मनुष्य प्रातःकाल वा संध्यासमय देहली पर बैठे तो वाके घरसों पुण्य दानहटे संपत घटे और कष्ट बढ़ै ॥

२७ शि० हे अर्जुनजो कोईप्रातःकालकूड़ा पौली पै वा अहंकारी धनवानकी संपतिलक्ष्मी जीके यापतें थोड़ेही दिनमें जातीरहै ॥

२८ शि० हे अर्जुन जो मनुष्य बाग और ताल नदी के किनारे पर दिशा जाय सो बहुत काल नर्क में पड़ै॥

२९ शि० हे अर्जुन जो मनुष्य ग्यारस के दिन अन्न खाय व्रत न राखै उसका जीवना पशु के समान है अंत काल पंच हत्यान का अपराधी होयकै नर्क में वास करै इसलिये मनुष्य को उचित है कि ग्यारस का व्रत धारन करै दिनभर श्रीदीनदयाल के ध्यान में रहै और रात्रि को जागरण करै तो वाके पापन को नाश होय और पितृस्वर्ग को जाय यह सुनके अर्जुन ने प्रश्न किया हे दयाल जो भूलके व्रत के दिन अन्न खाय तो वह या पाप सों कैसे मुक्ति पावै श्रीकृष्ण बोले भोजन करते भी जानो जाय फिर आचमन ले तुरत भोजन को त्याग दे व्रत धारै तो व्रत को पूरण फल प्राप्त होय और जो कदाचित् निर्जल न राख सकै तो गाय के दूध के सिवाय और कोई अहार न कीजे ऐसे व्रत को फल यज्ञ के समान है और ग्यारस को अन्न खाइबो कोड़ के समान है जितने चांवल खाय उतनी हत्या सिर पै चढ़ै और जो व्रत न राख सकै तो भी ग्यारस को चांवल खाइबो दोष है क्योंकि ग्यारस को सारे पाप अन्न में बसे हैं अर्जुन यह गुप्त बातें सुन कंपित होय महा शोकसमुद्र में डूब गया तब तो श्रीकृष्ण जीने वाको सोच अवस्था में देखी जान अति दयालुता से वाके मन का क्लेश मिटायकै आज्ञा कीकि हे अर्जुन आगलौं जो तासो

नीचकर्म बन आये तिहि कारण यह गुप्तभेदतो
सों प्रगट कियो मनलगाय वाको अंगीकारकर
जोतेरे कामअवे यह आज्ञा पायके अर्जुननेश्री
कृष्णजीके चरणारविंदमें शिरनाय के प्रसन्नता
सहित होऊकर जोरकेस्तुतिकी कि हेमधुसूदन
हृजभूषणजो आपने संसार सागरसे उतारबेको
यह शिक्षा नौका रूप मुखारबिन्दसे आज्ञा की
ताकी महिमा गायबेको मेरा क्या उनमान है
जहां शेष दिनेश वेदादिक पारनपाय सकेंसोहे
नाथ मेरी रक्षा करो अर्थात् और कुछ आज्ञा
कीजिये श्रीकृष्णजीने अर्जुनको परम अधिकारी
जानके आज्ञा की ॥

३० शि० हेअर्जुन जो मनुष्य रजस्वला स्त्री
सों मैथुन कर्मकरे सोया पापनके कारण संसार
में रोगाग्रसित रहे और अन्तकाल नरकमेंजाय
के हजार वर्षसों अधिक बासकरै कारण यह है
कि रजस्वला स्त्री पहिलेदिन ब्रह्म हत्यारी दूसरे
दिन चांडालनी तीसरे दिन धोबनके समानहो-
तीहै इन तीन दिन में वाके बस्त्र छूने और मुख
देखने में वाको पापलगताहै कदाचित् रजस्वला
स्त्रीके हाथसे मनुष्य कोऊ बस्तुको भोजन करै
तो अपनी अवस्था में जितने पुन्यदानकिये होंय
सोसब नाशको प्राप्तहोय इसलिये मनुष्यको उचि-
तहै कि चौथेदिन शुद्ध स्नानकरे तबस्त्रीके पासजाय
और जो चतुर्थदिन संगम स्त्रीसो न करैतो एक
मनुष्यमारनेकी हत्याहोतीहै यहसुनके अर्जुनने

बिनती कीकि हे जगदीश अंतर्यामी जोवास्त्रीको पुरुष परदेस होयतो वा पापसे कैसे मुक्ति पावे श्रीकृष्णजीने कहा जोपुरुष घरमें नहीं होयतो स्त्रीको अवश्यास्नान करकेसूर्यके सन्मुख स्थितहोय कै अपने पतिकी सूरतको मनकी आरसीमें देख लेइतो वाको पति या पापसें मुक्ति पावे॥

३१ श्रि० अर्जुन जिस मनुष्यको जीव किसी पदार्थको भोजन मांगे वोहजीवको निरखराखे तो यादोषके कारणवह मनुष्यवाहीजन्ममें सदा दुखी और निराश रहै फिर मृत्यु समय जीव वाही पदार्थमें जाय प्राप्तहोयवह सुनकेअर्जुन ने प्रश्न किया कि हे नाथ निर्धन मनुष्य जीवकी प्रसन्नता कैसे करैश्रीकृष्णजीने कहा कि निर्धन मनुष्यकी प्रसन्नताके लियेरबिबारको जन्म नक्षत्र में वा अमावस्या के दिन श्रद्धाके अनुसार मन माने पदार्थके भोजन करै तो परमेश्वर वाकी कामना पूरणकरे॥

३२ श्रि० हे अर्जुन जो मनुष्य किसी को कोई वस्तु पुण्य अथवा और भांति देनीकर लेवे कि भूलके या अहंकार के कारन नहीं देइतो महापाप है अगले जन्ममें देइगा अरु वह मनुष्य वासे परलोक में लेइगा इसलिये मनुष्य को उचित है कि जो मुखसे कहै पूराकरै॥

३३ श्रि० हे अर्जुन जो मनुष्य कुकर्मकेबेटी का व्याहकरै इस पापके फलसे सदा दरिद्रीरहे औरवाके पितृदेवतर्पणसे विमुखहोनर्कमें जांय॥

३४ शि॰ हे अर्जुन कोई मनुष्य किसीसें कुछमांगे और वह देवैतौ या पुण्यको फल अश्वमेध यज्ञ के समान है क्योंकि जीव की प्रसन्नता से परमेश्वर कोभी प्रसन्नता का कारण है॥

३५ शि॰ हे अर्जुन मनुष्य को चाहिये कि किसीसें कुछ मांगे नहीं परमदयाल परमेश्वर ने जो दिया है वाहीसें संतोषराखै॥

३६ शि॰ हे अर्जुन जो मनुष्य कामना के अर्थ चारपाई या चौकीपै बैठके परब्रह्म जगदीशको पूजन करैतो फलदायक नहीं होय इस लियेमनुष्यको उचितहैकिपवित्र स्थानमेंऊनवस्त्र मृगछाला कुशासन वसी सहित बैठके पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके त्रिलोकी नाथ के पूजन और ध्यानस्मरणमें मनलगावै तौ फलदायक होय॥

३७ शि॰ हे अर्जुन जो मनुष्य श्री गंगा जी वा और कोई तीर्थ मूर्तिके स्नान दर्शन को जायकै पर स्त्रीपै कुदृष्टि करैतौ या पापसेंकभी नहीं छूटै और अन्तकाल यमके दूत वा पापीको नर्कमें लेजाइके तातीलोह वाकों देहीपै लगाकै अनेक प्रकारसें वाको संताप देवैं यह सुनके अर्जुन ने श्रीकृष्णजी की स्तुति करके विनतीकी हे वासुदेव मधुसूदन जगत गुरू कृपा करकेकुछ और आज्ञा कीजिये तासें तम अज्ञान दूरहोय अरुदीपकरूपीज्ञानसेंहृदयकेमहलमेंचांदनाहो॥

३८ शि॰ हे अर्जुन जो मनुष्य श्रीगंगाजी

के स्नानको पनघी पहरे जायतौ गंगा स्नानको महातम नहीं पावै॥

३९ शि० हे अर्जुन जो मनुष्य चार मनुष्यों में बैठके कुछ सामग्री मंगाइके अकेला भोजन करैतौ या पापसें मुक्ति नहीं पावै दोष है॥

४० शि० हे अर्जुन जो मनुष्य इतवार द्वादशी अमावस्याको व्रतराखे खिचड़ी खायसों या पापके कारण और पदार्थन सें विमुखरहै वाके संतान न हो॥

४१ शि० हे अर्जुन द्वादशी को पुराण का श्रवण और पाठ अयोग्य है क्योंकि वादिनव्यास जी दिनभर परमेश्वरके पूजन ध्यानमें मनकोथिर करवैठतेहैं कदाचित कोई पुराण बांचैतोउनका मन ध्यानावस्था में पुराणकी ओर चलाय मान होता है॥

४२ शि० हे अर्जुन व्रतके दिन वा अदित वारको दर्पन में मुख देखना अयोग्य है तिलक लगाने के समय देखे क्योंकि तिलक नारायण का रूपहै॥

४३ शि० हे अर्जुन जिस चारपाई पर मनुष्य व्याहता स्त्रीके संगसोवे वाकोंभाई वैठे वा और किसी को देवे तो महा दोष है॥

४४ शि० हे अर्जुन जो मनुष्य किसी से तिलले के भोजनकरे तो बड़ो दोषहै यह सुनके अर्जुनने प्रश्न किया कि हे दयाल कदाचित् कोई हिंदू आदि तिल खवावे तो किस रीति से दोष

निष्ट होय श्रीकृष्णने कहा कि प्रथमतो भोजन ही न करे और करे तो वाके बदले माषा खवायके नहीं तो ब्राह्मण को देवे क्योंकि तिल दान को बड़ो फलहै॥

४५ श्रि० हे अर्जुन जोनर लंघी कर जल न लेइ अपवित्र रहै सुकर्म जाय॥

४६ श्रि० हे अर्जुनजो मनुष्य मनको रोकके एकचित होकेप्रीति भावसों कथा श्रवण करते हैं सो वैकुण्ठमें नाना प्रकारके सुख पावेंगे॥

४७ श्रि० हे अर्जुन जोकोई किसीकीअमानत धरीहुईको अपने कामको लेकर मुकरजायसो अंतकालनर्कमें जायदुख भोगेगो वाकीवांझहो॥

४८ श्रि० हे अर्जुनजो मनुष्य अपनी ब्याहता स्त्री को त्यागे औ बजारके नीचे से मैथुन समय गौको भगावैतो इस पापसे नर्क में जाय और उसकी संतान बे औलाद रहै॥

४९ श्रि० हे अर्जुन जिस समय करजदार के घरबोहरा आवके अपने रुपयेका तगादाकरै औ क्रोधसों सौगन्दखायके द्वारपै बैठे, उससमय करजदार जो अन्नजल खायतो इस पापसेमहा दोषहोय जन्मभर दरिद्री बिपती रहै॥

५० श्रि० हे अर्जुन जो मनुष्य अपने कुटुम्ब को वा नातेदारों की बुराई करै तो इसपापके कारण पुत्रका मुंहनहीं देखै॥

५१ श्रि० हे अर्जुन जो मनुष्य अपने मुंहसे अपनी स्तुतिकरै औरों से अपनी स्तुति सुनकै

प्रसन्नहो तो अन्तकालनर्कमें जाय डूबेनचाहे॥

५२ श्रि० हे अर्जुन जो बाग के हरेवन को काटै वा ताल पोखर को मांटी से पाटै और कुई बिद्यावै ध्यानन देवै इस पापसे नर्कमेंजाय मुक्ति न पावे॥

५३ श्रि० हे अर्जुनजो मनुष्यबैलयाघोड़े का बधिया करै तो धन संतानको सुख न देखे और अगलेजन्ममें हीनडाहोय औबड़ोंके मुहतसेआप होजड़ा न होयतो उसके पुत्रनपुंसक होयदरिद्रीहोंय इसके समान और कोई पापनहीं है॥

५४ श्रि० हे अर्जुन जो मनुष्य रुपये के बदले धरतीको अपने कब्जेमें लावै सोइस पाप के कारण अंधाहोय औ सन्तान को सुखन पावे पुत्रजवान होकर मरजाय॥

५५ श्रि० हे अर्जुन पिता औ बड़ेभाई और जो उमरमें आपसों बड़ाहो।इ उनको खोटा बचन बोलना महा पाप है॥

५६ श्रि० हे अर्जुन जो मनुष्य चरती गाय को जंगलसे भगावै तो मुक्तिनहीं पावै औ निपुत्रा रहै॥

५७ श्रि० हे अर्जुन जो मनुष्य अपने स्वामी वा पिताके संगयुद्धमेंजाय औ कायरता सों उन को छोड़ भागे इसपापसे वाको सब शरीर राध पड़के गलजाय॥

५८ श्रि० हे अर्जुन जिस मनुष्य ने अपनी अवस्थाभरमें गंगाजी वा और तीर्थमें स्नान नहीं

क्रिया नादारी वा नातेदारनकी लज्जावे वाका जीवना संसारमेंढोरके समानहै इसलिये मनुष्य को अवश्यहैजो सो सहित तीर्थ स्नान करके कुछ श्रद्धाहोय सो पुण्यकरै अश्वमेधको फलपावै और वाके पुत्री सदा सुखीरहैं यह सुन अर्जुन ने प्रश्न किया हे जगदीश जिसको नातेदारों की लज्जा वा नादारीसें तीर्थस्नान स्त्री सहित न प्राप्तभया उसको कहा कर्त्तव्य है श्रीकृष्णजी बोले कि जब पूर्णमासी वा संक्रांति वा पुण्य व्यती पात सिद्ध योग अमावस्या जन्म नक्षत्रादि शुभवार आवै तब स्त्री सहित किसी नदी यातलावपै कुएंहोद या घरमें स्नानकरके श्रद्धाहोय सो पुण्य करै तो यज्ञ के समान फलदायकहो पिछले पापन सों मुक्ति पायके बैकुण्ठधाम पावै हेअर्जुन यहवार्त्ता गुप्त है ४ वेदन में औ हैयन में जो तू इस फलका गाहक है तासों तेरे आगे कही॥

५९ श्रि० हे अर्जुन मनुष्य को उचित है कि किसीका पर्दा न उघारे दोष है॥

६० श्रि० हे अर्जुन जो मनुष्य ब्याई हुई गऊका दूध बछरा को न्यारा करके दूहे सो दुखावे नहीं तो इस दोष ते बहुत काल नि-पुत्र रहै॥

६१ श्रि० हे अर्जुन अपने कबीलेको घायल करै वा और जीवको मारना या उसकी बुराई करना बड़ा पापहै॥

६२ श्रि० हे अर्जुन जो मनुष्य किसीके हि

षे पर कब्जा करै तौ अवश्य उसकी स्त्री बांझ होय कुकर्मी होय जन्मभर दरिद्री निपुत्रा रहै और जो पुत्री होयकै जीवै तौ विधवा होय पानी देनेवाला कुलमें न रहै अंधा होय सदा दुखित रहै॥

६३　श्रि० हे अर्जुन जो मनुष्य चन्द्रसूर्यग्रहण में अन्न जल करै वा मूत्र करै वा पानी भरै तौ महादोष है चन्द्रमा औ सूर्य के श्राप ते धन संतानको सुख नहीं पावै औ नर्कमें जाय॥

६४　श्रि० हे अर्जुन जो मनुष्य दिशा जायकै बचे हुये जलसों हाथपांव धोवै तौ महादोष है उसके कुनबेके मनुष्योंको प्रेत दुखी करैं क्योंकि वह जल प्रेतके भागको है भूलके ऐसा न करना चाहिये॥

६५　श्रि० हे अर्जुन जिस मनुष्य के संतान नहीं उसका जीवनो संसारमें तुच्छ है यह सुनके अर्जुनने प्रश्नकिया कि हे स्वामी पुत्रहीन मनुष्य को किसके हाथको तर्पण पहुंचे श्रीकृष्णजी इस बातपै हंसे और कहा कि हे अर्जुन ये गुप्तबातें जो तेरे आगे कहताहूं देवता भी नहीं जानते इनपै अमल करना यज्ञके तुल्य फलदायक है जो निपुत्रे मनुष्य की स्त्री सुखीनहोय और प्रीति भावसों मनको शुद्ध करके तर्पण औ श्राद्ध करै तौ वाके पतिको पहुंचै औ पुनीत स्त्रीके सुकर्म-नसों वाकी ७ कुलस्वर्गमें जायं औ उसको कदा-चित् अपने पापनके नर्कमें होतौ मुक्तिपावें॥

६६ शि० हे अर्जुन द्वादशी अमावस्या रवि वारको शरीरमें तेल मलनेका महा दोषहै॥

६७ शि० हे अर्जुन गृहस्थी के घरमें पीपल आदि वृक्षका राखना नहीं चाहिये क्योंकिप्रति दिन एकवार पितृ देवता अपने पुत्र के घरमें आवते हैं जो वहां ब्राह्मणको मिठाई खाते देखे तो प्रसन्नहो आशीर्वाददें औ वृक्षमें औ परी देव भूत प्रेतादिकको वास देखकर उनसे डरके घरमें आवैं नहीं आप ही जांय तो वह मनुष्य निर्धन होके सदा दुखी रहै इसलिये घरमें वृक्षको राखना औ रातिको तेल का दीपक पीपल के नीचे बालना अशुभ है॥

६८ शि० हे अर्जुन मनुष्य देह बड़ी कठिनाई सो बड़े जप तपके फलसे प्राप्त होती है यह देह पाइके अहंकारकी फांसीगलेमें मेलनी अयोग्य है देखो सदा सिरपै बालतो मौतके हाथमें रह-तेहैं औ न जानिये किससमय शरीर से जीव-न्यारो होजाय तिस पर मनुष्य कहै कि अभी लड़का है जवानी बुढ़ापे में धरम भजन किया जायगा यह बड़ी भूलहै जो छिणभंग देहमें झूठा भरोसाकरै मनुष्यको उचितहै जो क्रोध कामको त्यागकरै अहंकार औ बुराईसों अलग रहे ईश्वर ने जो दिया है उसमें संतोष राखे हर्षसे हानि लाभ भले बुरे को समान जानके सर्व जीवन में पूरण ब्रह्म परमेश्वरको एकसा देखै औ सदा स-च्चिदानन्द नारायणको ध्यानचरणमें मनलगावे

सदा प्रसन्न रहै क्योंकि अंतकाल माता पिता भाईनहीं सहायकरै सुकर्मकिये सहायहोतेहैं॥

६९ मि० हे अर्जुन जिस मनुष्यने पीपलको प्रतिदिन जलनहीं चढ़ाया औ महादेवका व्रत पूजननहीं किया उसको शरीरहोनेको समान है सदा निर्धन औ दुखीरहै यह सुन अर्जुनने प्रश्न किया हे वासुदेव किसीको नित्य पूजननहींप्राप्त होइ तौ कहाकरै श्रीकृष्णने कहा शनिवारको वृक्षराज पीपल की जड़में त्वचा में विष्णु ब्रह्मा शाखामें महादेव पातपातमें देवतोंको वासहोताहै और सब तीर्थने सहित पीपल को पूजन करते हैं इसलिये जो मनुष्य हर शनिश्चर को नियमकरके पीपलको पूजन औपरिक्रमा करता रहै और कभी कभी पीपल के नीचे ब्राह्मण को भोजनकरावै आप भोजनकरै इस पुण्यसे देवतों के आशीर्वाद पाइकै धनसंतान सुखपावै मनोरथ पूर्णहोय कदाचित् पुरुष व्रत न रखसकै तौ उसकी स्त्री इसीरीति सों व्रतरखै औ महादेव को पूजन पति सहित करैतो इतने पुण्यहों जो लिखनेमें न आवैं यह वार्ता सुनके अतिप्रसन्नता सों हाथजोड़ अर्जुन बोलाकि हे महाराज इस के सुनेसे बड़ा आनन्दहोता है कृपाकरि और आज्ञाकीजै श्रीकृष्णजीने कहाकि हे अर्जुन यह पुनीत वार्ता वेदों की तेरे आगेकही और अब कहताहूं चित्त लगाके सुन॥

७० मि० हे अर्जुनजो मनुष्यज्ञानकरके गूलर

औ मऊवाके वृक्षतले जायतौ चौथाई फल वृक्षकी मिलै यह सुनके अर्जुनने कारणपूछौ श्रीकृष्णजी ने कह्यौ कि नृसिंह अवतार हिरण्यकशिपु दैत्य को पेटनखोंसे फारडारा तबनृसिंहजी के नखमें ज्वालाउठी सो वहां मऊआ औ गूलरकै वृक्षकी दृष्टिपरे तब होउ पंजा वृक्षनके लगाये नखनकी ज्वाला मिटगई ताही समय नृसिंहजी ने कृपा दृष्टि सों उनको आज्ञा की जो स्नानकरके नीचे आवै ताको स्नानको चौथाई फलवृक्षों को मिले अर्जुनने प्रश्नकियाकि हे स्वामीजो मनुष्य भूलकै चलाजाइ तो कैसे वाको फल बचै श्रीकृष्णजी ने कहाकि तीनबार नृसिंहजीको नामलेतो वृक्षन को फल न पहुंचै॥

७१ श्री० हे अर्जुन स्नानकरके चारपाईपर बैठगयेसोबाहरजायकेभौरोंसे मिलापकरनेसे स्नान का फल जाताहै स्नानकरकै कुछ खायकै जहां चाहे जाय तो कछ होवनहीं॥

७२ श्री० हे अर्जुन आमके वृक्ष तथा बाग के वृक्ष काटने को दोष दश ब्रह्महत्या के समान है औ बाग लगानेका पुण्य हजार यज्ञके समान है इसलिये उचितहै कि संपूर्ण बागलगायबेकी सामर्थ नहीं होयतौ येबाके पांचवृक्ष कुठौर में लगायेकि जीवना सफलकरै क्योंकि वृक्षलगावने का पुण्य अश्वमेध यज्ञके समानहै जबमेह बरषे उन वृक्षके पत्तों नसों जलकी बूंद पृथ्वीपै पड़े उसका पुण्य होताहै जैसे पतिव्रता स्त्रीको अपने

पतिकी सेवासे पुण्य फल दायकहै औ इस अपार पुण्यकी महिमा लिखनेमें नहीं आवै जोलगावै उसके पांच पुस्तके पुरुषा वैकुंठमें वासपावैं॥

७३ श्रि० हे अर्जुन जो मनुष्य तुलसीजीको दृक्ष अपने घरमें राखै औ प्रतिदिन स्नान करके तुलसीको चन्दन अक्षत पुष्पसों पूजन करे औ रात्रि को दीपक बालैतो उसके घरमें यमके दूत नहीं आवैं औ लक्ष्मीका प्रकाशहै यह अश्वमेध यज्ञ के समान फल देतहैं जो कदाचित् नित्य नहीं बनैतो कार्तिक औ अगहनमें तो प्रतिदिनपूजन करे औ आंवलेके दृक्षतले जाकै ब्राह्मणको भोजन करावै तो नरमेध यज्ञके समान फलहो परंतु आदित्यवार आंवलेको न पूजे॥

७४ श्रि० हे अर्जुन क्वारा मनुष्य तर्पण वा श्राद्ध करै उनके पितरोंको नहीं पहुंचे॥

७५ श्रि० हे अर्जुन जिसके घरमें बांझस्त्रीहो उसको संसारमें नरकहै वा स्त्रीके हाथका अन्न जल खाइयेतो महादोषहै इसपापसो मुक्तिपावै नहीं औ उस जन्ममें उसके मुखसें दुर्गन्धिआवै यह सुनके अर्जुन ने प्रश्न किया कि जो ऐसी स्त्री अपने कुटुम्बमें या नातेमें होय और कछु खवावै तो कैसे पापसों मुक्ति हो श्रीकृष्णजीने कहा जो भोजन करने के समय प्रथम अनन्त घट परब्रह्म को नाम लेके प्रार्थना करें कि अघमोचन अधम उधारन है फिर एक ग्रास पै ज्योति स्वरूप को नाम लेके जल पृथ्वी पै डारै औ भोजन करै तो

दोष नहीं धन संतान बढ़ै ॥

७६ श्रि० हे अर्जुन कोई मनुष्य पानीका लोटा वा घण्टी किसी दूसरे के लिये औवाके हाथ सेके को पिये तो दोष है क्योंकि इसलिये मनुष्यको उचित कि है दूसरे के हाथसे घंटीले पृथ्वीपै धरके आपपिये तो दोष नहीं लगे ॥

७७ श्रि० हे अर्जुन जो मनुष्य जिस पात्र में भोजनकरै वाको मांजै नहीं और बचीहुई जूठन को वाहीपात्रमें राखे तो महादोषहै अन्नके शापतें वह मनुष्य सदा दरिद्री और दुखी रहै ॥

७८ श्रि० हे अर्जुन जो मनुष्य अपने घर औ आंगनमें प्रतिदिन बुहारभाड़ कै सफा नहींराखे सोइस महादोष सो पितृ देवतों के शाप सो छः महीने में निरधन होय और यह बातभी जाननी चाहिये कि पिताके पापन सों पुत्रभी दरिद्रीहोय औस्त्रीके पापन सों पति वैकुण्ठवा नरकमेंजाय ॥

७९ श्रि० हे अर्जुन नदी औ कुवांको घरमें तातेजलसों स्नानकरनो सुफल नहींहोय यहसुन अर्जुनने प्रश्नकिया किनदी औद कुवां नहींमिले तोकहाकरना उचितहै श्रीकृष्णजीनेकहा ताते जल में हाथन डारैतौ गंगाजलके समानहै औ हाथ डारै तो मदके समानहै हे अर्जुन बातनमें ध्यान धरनो बड़ो कठिन है परंतु जो कोई भगवानको भक्त बुद्धिमान है सोई मनको शुद्धकरके ध्यान धरतहै यह सुनके अर्जुनने बड़ा शोच किया और श्री कृष्णके चरणारविन्दमें विनतीकी हे सच्चिदा-

नन्द वासुदेव इन बातोंमें कुछ एकतो अमल में आई हैं कुछ नहीं आई सो कैसे कर अन्तसमय मुक्ति पावैगा श्रीकृष्णने अर्जुनको सोच समुद्र में डूबा देख अति दयालुतासे धिरासा देके आज्ञा की कि तू सोच मतकर धीरज करकै ध्यानधर इन बातनसों काटै पाप निधीर ॥

८० श्रि० हे अर्जुन जो मनुष्य स्नानकरके तिलकनहीं लगाते उनको न्हायबो पशुकेसमान है कदाचित् ब्राह्मण खौड़ तिलककरै तो उसको दण्डवत् करनी अयोग्यहै सो उसके माथेपै ऐसो तिलक देखबो बड़ादोषहै और जो सदा तिलक धारीको देखके यमके दूत डरतेहैं औ कुढ़ते हैं ॥

८१ श्रि० हे अर्जुन जो मनुष्य अपने मनको संकल्प विकल्प करके निशदिन संकल्प सोच समुद्रमें डूबो राखे सो सुखको स्वप्नमें भी नहीं देखे इसलिये मनुष्यको उचितहै होतब्य पै दृढ़ करकै सुख दुखको समान जानै औ ईश्वरके स्मरण भजनमें सदा मनको प्रसन्नतासे राखे ॥

८२ श्रि० हे अर्जुन मनुष्यकी देह बहुत कठिनाईसे प्राप्त होतीहै कदाचित् दधीका भोजन प्रतिदिन प्राप्त नहीं होयतो पूरन मासीको अवश्य भोजनकरना चाहिये याको महापुण्यहै ॥

८३ श्रि० हे अर्जुन जो मनुष्य मसूर बैंगन लहसन खाताहै वाको नरकमें ठौर नहीं मिले क्योंकि इनके बीज पेटमें २१ दिनलौं रहता है दिन२१में जो मृत्यु होजायतौ नरकमें वासपावै

यह सुनके अर्जुन ने प्रश्न कियाकि हे त्रिलोकी नाथ किसीने इनमें से एक वस्तुखाई होता पाछे मृत्यु आय पहुंचीतौ कैसे यह पापजाय श्रीकृष्ण जीने कही गंगाजल पीवेतो वह दोष वस्तुपेटमें निकसजाय दोष निवृत होय॥

८४ श्री० हे अर्जुन जो मनुष्य अपने घरमें एक दीपक आठोंपहर जगायेराखे किसीसमय बढ़ने न देतौ वाके पितृदेव अति प्रसन्नता सो आशीर्वाद देंइ और अगले जन्म में भगवान की कृपा सों धन संतानका सुखपावे अंतसमय वैकुंठ धाम पावे॥

८५ श्री० हेअर्जुन जो मनुष्य भोजन करके बचीभई जूठनको दूसरी बार खाय अथवा और कोाऊ खवावै तौया महा पापसों अवश्य दरिद्री होय॥

८६ श्री० हे अर्जुन जो मनुष्य रात्रि को अंधेरेमें भोजनकरै अथवा भोजन करतेमें दीपक बढ़जाय औा भोजन किये जाय सो इस दोषके कारन धनसंतान का सुख नहीं देखे क्योंकिऐसे समय का भोजन प्रेत के संग भोजन करने के समान है॥

८७ श्री० हे अर्जुन जोमनुष्य अपने सिरकी बंधीहुईपागकिसीको बखशे तौबड़ा दोषहै क्यों कि उसकी वृद्धिघटके लेने वालेकी वुद्धिवढ़तहै॥

८८ श्री० हे अर्जुन दक्षिण की ओर पांव करके सोवना बड़ा अशुभ है॥

८९ श्रि० हे अर्जुन लड़की चारवर्ष लौंपार्वती है ६ वर्षलौं देवकन्या है ९ वर्षलौं कन्याकहावै है इनअवस्थाओं में लड़की का बिवाहकरै तौ यज्ञके समानहै औरजो १२ वर्षसे अवस्था बीतेपै बिवाह करैतो महादोष है॥

९० श्रि० हे अर्जुन जो मनुष्य सिरपैअंगोछा बांधे औ अकाच्छ रहै तो उसके सगरे पुन्य नाश होंय औ पापकी फांसमें फसे औ अंतकालनरक मेंजाय औ उसके पितृ देवता नर्कवासी होंय क्योंकि उसकेपैर धरनौ ऐसोहै किजैसे गऊ की पृथ्वीपै भार उसपै पांवधरनो॥

९१ श्रि० हे अर्जुनबासीजलसों तर्पनकरनो लहूके समान है या पापके कारन नरकमें जाय के राध लोहू के भरे हुऐ कुंडमें बासकरै॥

९२ श्रि० हे अर्जुन हाथ पांव गरेमें सोने को राखना पुनीत है क्योंकि स्नान करनेके समय जो जल सोनसे लगके शरीर पर पड़ै तो गंगा जलके समान है॥

९३ श्रि० हे अर्जुन जो गंगा आदि तीरपै न्हाये पहिले धोतीको धोवनो महा दोष है॥

९४ श्रि० हे अर्जुन जो कुटुम्बमें से कोई मनुष्य तीर्थ पै जाय वाकों चाहिये प्रथम स्नानकरै फिर तर्पणको फल प्राप्त होय॥

९५ श्रि० हे अर्जुन जो बीमार गंगाजीया और तीर्थपै मृत्यु पावै वाको अपजला करके जलमें बहावै तो महा दोषहै और अंतमें नर्क

बासी होय औ बाकी भस्म करके ७ दिन भस्म की चौकसी करै गऊ के सिवाय कुत्ता बिल्ली गधा आदि चौपाए और स्त्रीकी परछांई भस्मी पै पड़ै नहीं देहफिर आठवें दिन साल करके भस्मीको जेच में पधरावै और जेच की स्तुति सौं शुद्ध करै तो जगतके सर्व तीर्थनके स्नान और बड़े बड़े यज्ञको फलपावै औ स्तक बैकुंठधाम जाय दाहकको सदा आशीर्वाद देता रहै॥

९६ शि० हे अर्जुन मेहनरसतेमें सूर्यउदय होय तो वा समयका स्नान गंगास्नानके समान है जो देवतोंको भी प्राप्तनहीं होहै॥

९७ शि० हे अर्जुन सूर्यास्तपै भोजनकरनो जलपीवनो महादोषहै क्योंकि वा समय सूर्यजी औ दैत्योंमें युद्धहोताहै इसलिये मनुष्यको अवश्य है कि संध्यासमय त्रिलोकीनाथ के ध्यान स्मरण के सिवाय और कोई कामनकरै अर्थात् सूर्यको जलार्पण न करै सो बहुत वर्ष निर्धन औ दुखीर-है औ इस परभी ध्यान करनोचाहिये कि संध्या समय चार घड़ी दिन सों चारघड़ी रात गए लौं प्रातःकालभी इसीतरह सोवना महाअशुभ है जो इन दोनों समय परमेश्वर के ध्यान स्मरण में मन लगाए रहै औ पुराण को पाठकरै तो समस्तपाप सों मुक्ति पाइकै सुख स्थान में बास पावे शुभ सन्तान हो॥

९८ शि० हे अर्जुन जो मनुष्य हाथपै धरकै रोटी खायतौ थोड़ेही कालमें दरिद्री होजाय॥

९९ श्री० हे अर्जुन जो मनुष्य और के धन सन्तानको देख खुनसाये सो इस लोकमें निरधन पर लोकमें नरक वास पावे और अगले जन्ममें निपुत्रा होइ॥

१०० श्री० हे अर्जुन जो नरके सुत न हो सो या संसार में सुख न पावे अन्तमें नर्कगामी हो दूजेजन्म निपुत्रारहे॥

१०१ श्री० हे अर्जुन जिसस्त्रीके बालकपैदा होय उसके हाथका ४५ दिनतक अन्नजल खाय तो दोषहै पितृ अधो गति जाय यह सुन अर्जुन ने प्रश्नकिया किहे दीनदयाल जो मनुष्य निर्धन और अकेला होयतो किस प्रकार या दोष तें बचें श्रीकृष्ण बोले कि १३ दिन २३ दिन पाछे जच्चा श्रीगंगाजलसें स्नानकरके जो सामर्थ होय सो पुण्यदान करेतो दोषनहीं यह शिक्षा सुनके अर्जुन बोल्यो हे कृपासिंधु यहवार्ता सुनके चित्त में दीपकके समान उजियारो भयो और कृपा करके कुछ आज्ञा कीजिये॥

१०२ श्री० हे अर्जुन मनुष्य चित्तकी प्रसन्नता सो कुछ दान पुन्य करे तो अधिक फल पावे और जो क्रोध करै तौ अथवा दान लेने वाले को दुखी करे तो पुन्य निर्फल जाय औ पातकी होय॥

१०३ श्री० हे अर्जुन जो मनुष्य अपने बेटे को किसी की गोद देवे तो उस पुत्र के हाथको जल उसको नहीं पहुंचे औ कदाचित् दिये पुत्र को फेर लेवे वह पुत्र जवान होके मर जाय या

उसके बदले दूसरा पुत्र मरे औ अगले जन्म में धन संतान का सुख नहीं पावे औ नर्क वासी होय यह सुनके अर्जुन ने प्रश्न किया कि हे जगदीश जो कोई अज्ञान नर दिये पुत्र को फेर लेवे तो इस पापसे कैसे मुक्ति पावे श्रीकृष्ण जीने कहा कि वह मनुष्य अपनी स्त्री और पुत्र सहित श्रीगंगाजी में स्नान करके पीली लाल धूमरी धूमरी रंग की गौ दूध की ब्राह्मण को पुन्य करै औ परमेश्वर को दण्डवत् करके अपराध क्षमाकरावे तो इस पाप से मुक्ति पावे पुत्र के हाथ का दिया पहुंचे॥

१०४ शि० हे अर्जुन जो मनुष्य जिससमय युद्ध करते २ एक मनुष्य असामर्थ होय कै दूसरे की शरण आवे उस समय कदाचित् वह मनुष्य शरणागत का जीव सों मारे अथवा घायल करे तो इस पाप से उसके पुत्र जवान होय के मरें निर्धन हो स्त्री बांझ हो अगले जन्म में॥

१०५ शि० हे अर्जुन जो मनुष्य कागज अथवा लकड़ी पै मनुष्य आदि का चित्र बनावे तो इस पापसे इसलोक या परलोक में धन संतान का सुख नहीं देखे औ आंखों से अंधा होय॥

१०६ शि० हे अर्जुन जिस मनुष्य के बचन उच्चारण में थूंक बाहर आवै दूसरे पर पड़े तो अगले जन्म शूकरकी देहपावे अंत नर्कमें जांय

१०७ शि० हे अर्जुन जो मनुष्य अपनेस्वामी की आज्ञाको सुनके ध्यान नहींधरै सो महादुखी

नर्कमें जाय क्योंकि स्वामी की अवज्ञा करनी महापाप है यह सुनके अर्जुनने प्रश्नकिया हे यदुनाथ कदाचित् स्वामी ऐसी चाकरी फरमावै तौ सेवकसे नहीं बनपड़े तौकैसे पापसे मुक्ति पावे श्रीकृष्णजी ने कहा कि जो ऐसी कठिन चाकरी सेवकसे न बनपड़े तौ जिसदिन तलबसे स्वामी की आज्ञा टारी वा दिनसे जबलों स्वामी दूसरी बार किसी काम की आज्ञा करै और सेवक उसकामको मनलगाय करै उतने दिनकी तलबस्वामी सों नहींलेय तो या दोष दूरहोय कदाचित् उतने दिनकी तलब लेइ तौ धन को सुखनहीं पावै औ अन्तकाल यमके दूतवाकोबड़ा दुखदेहैं उसतलबकोउलटीफेरदेइयह सुनअर्जुन ने पूछाकि हे जगदीश सेवकसों स्वामी की चाकरी मेंचूक पड़े कदाचितवह कबीलदार और निर्धनहोय तो वाको तलबफेर देनेकी सामर्थ न होयतो कैसे या दोषतें मुक्ति पावै श्रीकृष्णजी ने कहाकि उसतलबमें से चौथाई पुन्य करके परम दयाल परमेश्वर से अपना अपराध क्षमाकरावै तो या दोषतें मुक्ति पावै औ सदा सुखी रहै॥

१०८ श्री० हे अर्जुन जो मनुष्य हवेली तालाब कुआ आदि कोई मकान बनावे औ अघवने मकान की भीत पा धरती पै बैठ के भोजन करै तो महा दोष है इसलिये मनुष्यको उचित है जब संपूर्ण मकान बनचुके तब वी सहित वाकी प्रतिष्ठा करकै परिक्रमा करै औ ब्राह्मणन कूं

भोजन कराके गौदान करै फिर कुटुम्ब सहित आप भोजन करि इसरीति से करै अश्वमेध के समान फलहो औ परम सुख पावे ॥

१०९ शि० हे अर्जुन जो मनुष्य तीर्थयात्राको जावै औ रस्तेमें किसीकी मिहमानीखाय तो महादोषसें जन्मभर संसार के पदार्थ सें बिमुख रहै औ यात्रानिष्फलजाय क्योंकि यात्राको फल मिहमानीवाले को प्राप्तहो यह सुनके अर्जुनने प्रश्नकिया कि हे जगतगुरु रस्तेमें कोई भाई या नातेदारमिले औ मिहमानीकरैतो किसप्रकार दोषदूरहोय श्रीकृष्णजीने कहा जाती बिरियां किसीका न खाय आतीबिरियां मिहमानी खाय तो दोषनहीं परंतु तीर्थ देवस्थानपै भूलकर किसीभाई या नातेदारकी मिहमानीनखाय कदाचित् वे लोग हठकरें तो सानयात्रासें निश्चिन्त होयके तीर्थकी परिक्रमा करके चलती बिरियां मिहमानीखाय वासेंबीसगुनी ब्राह्मणको खवावे तो दोषजाय यात्रा सुफल होय ॥

१११ शि० हे अर्जुन जो मनुष्य पक्षियों के घोंसलामें छोटे२बच्चोंको बाहर निकालें तो या जन्ममें दरिद्री होय औ वाकेपुत्र जवान होयके मरैं औ अंतकाल नर्कमेंजाय फिर अगले जन्ममें धन संतानको सुखनपावै क्योंकि छूएतेपक्षी फेर पालैनहीं हेत उठजाय भूखे प्यासे होके मरजांय इसलिये यह अपराध उसमनुष्यके शिर चढ़ा ॥

११२ शि० हेअर्जुन जोमनुष्य गौकोदोहती

समय न लगावै तौ दोषहै याते बिन छाने ताता करै या पीवै तौ दरिद्री होय क्योंकि या पापके समान और कोई पापनहीं इसलिये मनुष्य को अवश्यहै कि दूधको छानके ताता करके पीवे ॥

११३ श्री० हेअर्जुन जोकोई या पुरुष रोतेहुये बालककोमारै सो नरकमेंजाय औ सब पदार्थ से बिमुख होइके निपुत्रा रहे औ कदाचित् पुत्र होय तो मरजाय इस पाप से उसके पितृदेव बैकुण्ठ से नरक में जांय ॥

११४ श्री० हेअर्जुन जोमनुष्य मुंहधोयेबिन पान या दूध आदि कुछखाय और स्वामीकी बस्तु को मोल दिये बिनलेखायतो इसजन्ममें दुखीहो ॥

११५ श्री० हे अर्जुन वृक्षको कच्चीफल तोड़नो दोषहै फल पकजाय जबतोड़ै तौदोषनहीं ॥

११६ श्री० हेअर्जुन जो मनुष्य चाकरी की तलब औरनेमिलका नेग नहीं देइतो इसलोकमें भलाई नहीं पावे औ इसपापसों जन्मभर दुखी औ निपुत्र रहे अंतकाल नरकमेंजाय कदाचित् वाकेपितृ स्वर्गबासीहोंयतौ नरकमें नसैं ॥

११७ श्री० हेअर्जुन जोमनुष्यदानकी बस्तु को पात्रमें मेलकै औरपात्रको हाथमें धरकै संकल्पकरै औब्राह्मण स्विलीना देवेतो हाथ और पात्र संकल्पमें आजाय इसलियेबरुपात्रभी देदेनो चाहिये औहाथके बदलेमें मबलौं सुवर्ण या चांदी यातांबाकोहाथबनवाके ब्राह्मणको नहींदेतबलों जोखाना पीना या शुभकर्म हायसेकरे सोफलदा-

यज्ञनहीं होय अर्जुनने प्रश्नकिया कि हे यदुनाथ जिससे हाथ औ पांव कहनेकी सामर्थ न होय तौ किस प्रकार इनपापसों छुटिपावें श्री कृष्णजीने कहा कि मनुष्य को चाहिये जो कुपढ़ औ मूर्ख ब्राह्मणहो अथवा होतो दूसरोंसे देदे औ पुण्य दान का संकल्पकरैतो विद्यमानकरै नहींतो दोषहै॥

दो० जिसनरकी नारीमरै करैदूसरोव्याह। नादेखे संसारमें सुखसंपति सुतआह॥ यहसुन अर्जुनने कह्यो हे घनश्यामसजान॥ याको कारण कौनहै कहिये सुखकी खान॥ कहीकृष्ण तेहीं हित् ध्यान धरो मनमाहिं। व्याहकरै सुतहीननर तौकछूपितनाहिं॥ पैजिस नरके पुत्रहो बहुरिकरैवहव्याह। पावैदुख संसारमें बड़ समुद्र अथाह॥ चौ० जबदूजी घरनारी आवे। प्रथमनारिके पुत्र नभावे॥ जो लाता सब करैनप्रीति। रहैंनिपुत्री जगमें भीति॥ बहुरिनरकमें जाकर परै। बहुप्रकार परमदुखभरै॥ दो० फिरनारी अदनरहोज पावैं सूकरदेह। या अंगीकी देहधरिकरैं बहुसनेह॥

११९ शि० दो० हे अर्जुन ज्वारीजुवा करै खेलसों प्रीति। धनको सुखपावैनहीं जगमें रहत प्रतीति। अन्तनरकमें जायके पावे कपट अनेक। भाटदेह फिर पाइके बोले झूठ अनेक। सात बार घरभाटके लेवहनर अवतार। बहुरि नरकमें जायके पावे दुःख अपार॥ तासों हे अर्जुन हित् जूवाको ब्यौहार। भूल चूक कोजैनहीं यहसुन बारंबार॥

१२० शि० चौ० भाटभांड और कलार। इनतीनों को देखो हार॥ भांडकलेइ कारिको झगझारी। औरनको ऐबनको भारी॥ भाटबुराई औरनगाय करैभलाई दातपाय। करैबुराई पासक-लार। जो बैठे औखाबैचार॥ लाजकाज रहबुद्धि बिचार। ताते यह इनसें खबरदार॥ दो० इनतीनोंमें एकको जोधनदेदातार। पावेअगले जन्ममें बाही को अवतार॥ घरघरफेर उदर भरे धन नहिं आवपास। अन्तकाल फिरपाइहैं घोरनरकमें बास॥ यहसुन अर्जुनने कियो बीतेपै अफसोस। पांयपर्यो घनश्याम के रह्यो नहीं कछु होस॥

सो० कह्यो श्याम पुनि सिखहो तजिपिछले दिननको।
हृदय धरो मो बात जाब कल्पना सबन को॥

१२१ शि० हे अर्जुन दिशा जाय पुनि आयकै हान करै जो कोय फल ताको पावै नहीं नर्क में बासी होय॥

१२२ शि० अर्जुन जो कटै नहीं चौथे दिन नखचीस। सप्तम दिन बनवावै नहीं हज्जामत सुखशीस॥ उन हाथनसों शुभकरम खाना पीना भाय। जो कारज वहनरकरै सो निर्फल होजाय॥

१२३ शि०हे अर्जुन॥ दोहा॥ चौदस मावस तिथि मिले अरु मंगलरविवार। जो नरइन में तेललैसलौं शीसके बार॥ कटवावैं नख आदि सों महापातकी होय। आप देवता पायकैं दुखी दरिद्री होय इन बारनके देवता न्यारे न्यारे जान॥ तिनकी जो पूजा करैं पावैं सो सन्मान। सुत संपतकों परम सुख पावै या जग माहं। अन्तकाल बैकुंठ में बैठ सुख की छांह।

१२४ शि० जो नर रोटी आजकी अगले दिनमेंखाय। सदा रहे बेमार वह अन्त नरक में जाय॥ रहे सुखी ससारमें उसके पुत्र निदान। यह सुन अर्जुनने कह्यो हे घनश्याम सुजान। जो कुनबी नरके बचे बस्तु प्रातकी आज॥ तौ कैसे या पापसों पावे सुख दराज। कह्यो श्यामने हे हितू मिष्ठाई पकवान॥ खावैं तो दूषित नहीं रोटीमें मतजान। इन बासी रोटीन को खानो दुख उपजाय। पाच पुत्र शारापड़े वह नर सुख नापाय। चारव्याध उत्पन्न हों जामें बासी खाय॥ आदि बुद्धिकी हानिहो दूजे तन घटजाय। तीजो अरु बलहीन हो चौथे खोजी खाट॥ इतने लच्छण पाइकै होवैं बाराबाट॥

१२५ शि० हे अर्जुन जो मनुष्य इतनी बातनको अपने चितसों कभी न्यारी नहीं करै तो इस लोक औ परलोकमें परमसुखपावे प्रथम स्वामीकी सेवामें हंसमुख औ निलोंभरहे दूजेचाकरके मन को दुखीनराखै तीजे क्रोधनहीं करै॥

इति ज्ञानमाला समाप्त॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
ब्रह्मसार	सातवीं पुस्तक मात	कृष्णप्रिया
परमार्त्थसार	इस कृत	भगवद्गीता विष्णुस
प्रेमसागर	सत्यनारायण की क-	हस्त्रनाम सहित
सूरसागर	था सटीक	ज्ञान स्वरोदय
राग प्रकाश	शनिश्चर की कथा	भरतरी गीत
भक्तमाल	शूलकलेवा	देवीभागवत नागरी
अवधयात्रा	तुलसी शब्दार्त्थ प्र-	राम ब्याहोत्सव
कथा मझनजी	काश	बिहारी सतसई स-
रामायण टेपकी	कविकुल कल्पतरु	विश्राम सागर
रामायण जिल्दबन्दी	भाषा	रामरतन
रामायण तुलसीकृत	प्रेमरत्न	मनुस्मृति उर्दू टीस-
पत्थर के छापे की	बनयात्रा	वैष्णवी संध्या
रामायण तुलसीकृत	भजनावली	याज्ञवल्क्य भाषा
सटीक	बारहमासा फ़क़ीर	टीका सहित
सतसई रामायण	गुलाबसखा	प्रबोध चंद्रोदय नाटक
कवितावली रामायण	बारहमासा बलदेव	आनंदामृतवर्षिणी
गीतावली रामायण	प्रसाद कृत	भगवद्गीता
रामायण दोहावली	कृष्णसागर	भगवद्गीता सटीक नागरी
सुन्दरी चरित्र	मनोरञ्जन	निर्णयसिन्धु
रामायण नानार्त्थ-	हारीत स्मृति नागरी	अवतार कथामृत
नी सङ्कुलावली	रामायण रामविलास	दैवज्ञाभरण
दूसरी पुस्तक रामाय-	यमुना लहरी	ज्ञानचालीसी
ण माला	षट्पञ्चाशिका	शंकर दिग्विजय भा-
तीसरी रामायण गी-	कल्पसूत्र भाषा	योगवाशिष्ठ देवना-
ताष्टक	विनयपत्रिका सटी-	मार्कण्डेय पुराण
चौथी ज्ञानदोहावली	किताब पटवारी ४	बेताल पच्चीसी
पांचवीं रसमालिनी	भाग	दानलीला मानलीला
छठी तिथिबोध	रसराज	सभाविलास

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
विक्रम विलास	चित्र चन्द्रिका	ऐक् १० सन् १८५९ ई॰
इन्द्रजाल नागरी	[illegible]र्णव पिङ्गल	ऐक् ५ सन् १८६१ ई॰
कायस्थ कुल भास्कर	[illegible]यन नाम माला	ऐक् १० सन् १८६२ ई॰
क़िस्सा हंस गोपीचन्द भर-	[illegible]री	ऐक् १० सन् १८६२ ई॰
तरी	हित[illegible] छन्दो-	ऐक् २६ सन् १८६७ ई॰
बिहार बिन्द्रावन	[illegible]	ऐक् नं॰ १९ सन् १८६० ई॰
पद्मावती खंड [illegible]	विद्यार्थी की प्रथम	कवायद रेलवे और
लावनी व शेर बनारसी	पुस्तक	उसके साथ कानून भी है
युगल विलास	बाला बोध	ऐक् १६ सन् १८७३ ई॰
भाषा महाभारत विन-	गरुड़ पुराण प्रेतकल्प	गवर्मेन्ट कानून लगा-
य मुक्तावली	सांख्य तत्त्व कौमुदी	न मुमालिक मगरबी
जनक पच्चीसी	मनोहर कहानी	व शिमाली
शृंगार प्रकाश	क़ानून	ऐक् १४ सन् १८७४ ई॰
दोहावली रत्नावली	ताज़ीरात हिन्द अर्थात्	ऐक् १० सन् १८७३ ई॰
स्त्रीदर्पण	ऐक् ४५ सन् १८६० ई॰	
सभा बिहार बिन्द्रावन	ऐक् २५ सन् १८६१ ई॰	महाभारत भाषा छन्द
रमल सार	ज़ाबिते फौजदारी	प्रबंध में जो श्रीमन्महा
कथा चित्रगुप्त	मजमूआ ऐक् लगान	राजाधिराज उदितना-
कायस्थ दर्पण	[illegible] के साथ नीचे	रायण सिंहजी काशी
कृष्ण बाल लीला	लिखे हुये एक संयुक्त हैं	नरेश ने गोकुल नाथा-
गीत गोविन्द सटीक	ऐक् १० सन् १८५९ ई॰	दि कवीश्वरों से रचना
रामाभिषेक नाटक	[illegible]	कराय कृपवाया था अब-
इन्द्र सभा नागरी	ऐक् १९ सन् १८६३ ई॰	ही श्रीयुत माधव सिंह
सिंहासन बत्तीसी	ऐक् १४ सन् १८६५ ई॰	गहमर मेठी नरेश की
शुक बहत्तरी	ऐक् १६ सन् १८६१ ई॰	सहायता से इस यन्त्रा-
सम्पूर्ण कथा [illegible]	ऐक् नं॰ ३६ सन् १८६६ ई॰	लय में टैप के अक्षरों में
गुल बकावली	ऐक् २० सन् १८६६ ई॰	[illegible] पर्व मुद्रित [illegible] है
गुल सनोबर नागरी	ऐक् [illegible] सन् १८७० ई॰	